Epitome Journals
International Journal of Multidisciplinary Research
ISSN : 2395-6968 | Impact Factor = 3.656

भाषा शिक्षण और उसका विकास

प्रा. तडवी सैराज ए.

संत ज्ञानेश्वर महाविद्यालय सोयगांव.

सोयगांव, जि. औरंगाबाद.

Abstract :

''चार कोस पर बदले पानी, आठ कोस पर बानी,''

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है, भाषा एक सामाजिक है | मनुष्य प्राचीन समय से समुह में रहते आये है और समाज में रहते हुए वह एक दूसरे से परस्पर व्यवहार करता है | जैसे – जैसे मनुष्य का विकास होता गया उसी के साथ – साथ मनुष्य ने भाषा का विकास भी किया और अपने आप को अभिव्यक्त करने के लिए, हावभाव, चिन्ह, सिर, हाथ का प्रयोग करने लगे कालांतर से मनुष्य ने ध्वनियों के विकास के साथ – साथ भाषा का विकास भी होता गया | भाषा के विकास के साथ ही अनेक लिपियों का विकास होता गया | आज विश्व में अनुमानित करीब ३००० भाषाएँ बोली जाती है | इसके साथ ही अनेक लिपियों में भाषाओं को लिखा जाने लगा है |

Keywords : *मनुष्य, ध्वनि, भाषा, विकास, विश्व*

Dr. Pramod Ambadasrao Pawar, Editor-in-Chief ©EJ, All rights reserved.

Research Paper :

भाषा मनुष्य के विचारों का आदान-प्रदान करने का सशक्त माध्यम है | मनुष्य प्राचिन समय से लेकर आज तक अपनी अभिव्यक्ति को आधिक सक्षम बनाने के लिए अलग-अलग माध्यमों का प्रयोग करता रहा है | विचारों की अभिव्यक्ति के लिए भाषा एक सशक्त माध्यम रही है | मनुष्य जीवन के लिए भाषा एक अनिवार्य बात बन गई है | जीवन के हर क्षेत्र में व्यवहार के लिए भाषा की आवश्यक्ता होती है | जिस प्रकार से जीवन में अनेक रंग होते है, उसी प्रकार से भाषा के भी अनेक रुप है, जैसे विज्ञान की भाषा, विधि, गणित, प्रशासन, व्यक्तिगत, औपचारिक, अनौपचारिक भाषा के रुप है | वर्तमान समय में भाषा को लेकर अनेक संशोधन होते रहे है, इनमें भाषा का निर्माण कैसे हुआ? यह एक विवाधित प्रश्न रहा है | भाषा कें निर्माण के पिछे अनेक तर्क लगाए गए है |

भाषा शब्द का अर्थ :

भाषा शब्द की व्युत्पति 'भाष' धातु से हुई है, जिसका अर्थ 'बोलना' है | मनुष्य अपने भाव, विचार, अभिव्यक्ति के लिए बोलता है | भाषा मनुष्य के द्वारा बोलने के लिए होती है | मनुष्य अपने भाव, हात – पाव, हिलाकर, अंगविक्षेप से, पैरों को हिलाकर, मुद्राभिनय से भी व्यक्त कर सकता है लेकिन इनके द्वारा सूक्ष्म विचार व्यक्त नहीं हो सकते | इसी के लिए भाषा का उद्‌गम तथा विकास हुआ | भाषा में जिन ध्वनियों का प्रयोग किया जाता है और ध्वनियों से वर्ण बने हैं | भाषा में एक निश्चित प्रकार की व्यवस्था होती है | यह व्यवस्था एक भाषा को दूसरी भाषा से अलग करती है | भाषा एक सुसम्बध्द, योजना बध्द संघटना होती है |

भाषा की परिभाषा :

१) स्वीट :

"स्पष्ट ध्वनि संकेतों द्वारा विचारों की अभिव्यक्ति को भाषा कहा जा सकता है |"

२) भोलानाथ तिवारी :

"भाषा उच्चारण – अवयवों से उच्चारित, मूलतः प्राय यादच्छिक ध्वनि – प्रतिकों की वह व्यवस्था है, जिसके द्वारा किसी भाषा समाज के लोग आपस में विचारों का आदान प्रदान करते है|"

३) डॉ. श्यामसुन्दर दास :

"विचारों की अभिव्यक्ति के लिए व्यक्त ध्वनि संकेतों के व्यवहार को भाषा कहते है |"

४) प्लेटो :

"विचार आत्मा की मूक या अध्वन्यात्मक बातचित है, पर वही जब ध्वन्यात्मक होकर होठों पर प्रकट होती है तो उसे भाषा की संज्ञा देते है |"

Dr. Pramod Ambadasrao Pawar, Editor-in-Chief ©EJ, All rights reserved.

बोली अर्थ :

'बोली' शब्द की व्युत्पति 'बोलना' धातु से हुई है | बोली यह भाषा का वह रुप है जो घर – परिवार में प्रयुक्त होता है | तात्विक दृष्टी से भाषा और बोली में कोई अंतर नहीं है लेकिन व्यावहारिक स्तर पर व्यापक्ता, व्याकरण, बोधगम्यता, लिपिबध्दता आदि क्षेत्रों में भिन्न है |

भाषा, बोली में अतंर :

बोली का प्रयोग घर परिवार में अनौपचारिक रुप में होता है, किंन्तु भाषा का प्रयोग साहित्य लेखन, व्यवहार, शिक्षा, प्रशासन, न्याय, व्यवसाय, उद्योग आदि क्षेत्रों में प्रयुक्त होता है | बोली पर व्याकरणिक नियमों का बंधन नहीं होते जबकि भाषा व्याकरण के नियमों से अनुशासित होती है | बोली का क्षेत्र सिमित होता है जबकि भाषा का क्षेत्र व्यापक होता है | एक भाषा के अंतर्गत अनेक बोलियाँ होती हैं | बोली पर भौगोलिक, सांस्कृतिक, सामाजिक, वैधानिक व्यवस्था का प्रभाव होता है |

भाषा की उत्पत्ति :

विश्व में करीब ३००० भाषाएँ बोली जाती है | इनका विकास कैस हुआ? यह एक विवाधित प्रश्न है | भाषा की उत्पत्ति भाषा विज्ञान के लिए उलझे हुए प्रश्नों में से एक है | भाषा वैज्ञानिकों ने माना है कि यह जानना सम्भव नहीं है कि भाषा की उत्पत्ति कैसे हुई | भाषा उत्पत्ति को लेकर कुछ अनुमान तथा सिध्दान्त लगाए गए है | १) दैवी सिध्दान्त, २) धातु सिध्दान्त, ३) संकेत सिध्दान्त, ४) अनुकरण सिध्दान्त, ५) श्रम सिध्दान्त, ६) भावावेग सिध्दान्त, ७) इंगित सिध्दान्त आदि सिध्दान्तों से भाषा की उत्पत्ति मानी जाती है |

मातृभाषा :

'मातृभाषा' का शाब्दिक अर्थ है, मॉ की भाषा, जिसे बालक माँ के सानिध्य में रहकर सहज रुप से सीखता है | आमतौर पर बालक जिस घर में पैदा होता उसी घर में बड़ो से बोली जानेवाली भाषा को अनायास, सहज, स्वाभाविक, रुप से सीखता है, वह उसकी 'मातृभाषा' होती है | इस भाषा को 'प्रथम भाषा' कहा जाता है | मातृभाषा बालकों का स्वाभाविक विकास करती है | मातृभाषा को किसी विशिष्ट प्रदेशों में प्रयोग में लाईजानेवाली भाषा प्रादेशिक या क्षेत्रीय भाषा है | भारत में मातृभाषाएँ क्षेत्रीय भाषाएँ भी है | जैसे असमीया, मराठी, उडियाँ, पंजाबी, बंगला, संस्कृत, गुजराती, तामिल, तेलगु और उर्दू |

मातृभाषा व्यक्ति और समाज की आत्मीय भाषा होती है, उसकी सामाजिक परंमपरा और सांस्कृतिक विशेषताओं से जुड़ी होती है | मातृभाषा हमारी निज सम्पति होती हैं | मातृभाषा में हम अपने, मनोभाषों, अभिव्यक्ति, सुंदरता, सरलता, स्पष्टता से अपनी अभिव्यक्ति कर सकते है, उतनी अन्य किसी भाषा में नहीं कर सकते | व्यक्ति का बौध्दिक विकास, ज्ञानार्जन, उसके जन्मजात गुणों का प्रस्फुटन, उसकी रचनात्मक

Dr. Pramod Ambadasrao Pawar, Editor-in-Chief ©EJ, All rights reserved.

शक्ति एवं अभिव्यक्ति कुशलता के विकास का माध्यम मातृभाषा ही है | इसलिए शिक्षाविद मानते है कि शिक्षा का माध्यम मातृभाषा होना चाहिए |

भाषा का स्वरुप :

विचारों का सशक्त माध्यम भाषा है | बालक के मुँह से व्यक्त होने वाली ध्वनियाँ भाषा नहीं होती, उससे कोई अर्थ सूचित नहीं होता | भाषा में ध्वनियाँ, लिपी, उच्चारण, लेखन, मुद्रण महत्वपूर्ण है | भाषा के दो स्वरुप है, मौखिक तथा लिखित | मौखिक स्वरुप अस्थायी तथा लिखित भाषा का स्थायी रुप है | भाषा के प्रमुख चार अंग है, बोलना, लेखन, श्रवण, पठन, भाषा पर अधिकार प्राप्त करने के लिए इन चारों कौशल पर अधिकार प्राप्त करना होता है | भाषा की शिक्षा औपचारिक तथा अनौपचारिक रुप में प्राप्त की जाती है | भाषा उच्चारित ध्वनि संकेतों की एक व्यवस्था होती है | भाषा संप्रेक्षण का सहज माध्यम है | भाषा के दो पक्ष माने गये है मानसिक तथा भौतिक मानसिक पक्ष भाषा का अमूर्त रुप है, जो मनुष्य के मन में होता है, जबकी भौतिक रुप मनुष्य वागवयों की सहायता लेता है और भाषा का मूर्त रुप ग्रहण कर लेती है | भाषा का प्रयोग सभी कार्यो में तात्पर्य न्यायालय, शिक्षा, प्रशासन, विधि, राजकीय सेवाओं में किया जाता है |

भाषा का महत्व :

मानव सभ्यता तथा सांस्कृतिक विकास के लिए भाषा का महत्व सर्वोपरि है | भाषा मानवजाति के लिए ईश्वर का वरदान है | मानव मस्तिष्क के विकास की आधारशिला भाषा है | मनुष्य का, सामाजिक, सांस्कृतिक, बौध्दिक, मानसिक आदि का विकास भाषा के कारण ही हुआ है | भाषा के कारण मानव का विकास भाषा के कारण ही हुआ है | भाषा के कारण मानव का व्यक्तिमत्व विकसित हुआ है | मानव की आंकाक्षाओं वृत्तियों, मनोगत भाषों को भाषा के द्वारा ही प्रस्तुत किया जा सकता है | भाषा से ही मनुष्य, अपने विचारा, चिन्तन, अनुभव, अभिव्यक्त करता है | परिवर्तन प्रकृति का नियम है, भाषा में भी समय – समय पर परिवर्तन होता आया है | भाषा ज्ञान प्राप्ति का प्रमुख साधन है, आज मनुष्य ने जो प्रगती की है, वह केवल भाषा के कारण ही संभव हो पाया है |

हिंदी भाषा का महत्व :

मनुष्य के अस्तित्व के साथ ही भाषा का निर्माण हुआ चाहे वह सांकेतिक रुप में ही क्यों न हो | आज विश्व में अनेक भाषाएँ है | भारत में ही नहीं विश्व की सबसे बडी दूसरी भाषा हिंदी है, जिसे समझने वालों की संख्या अधिक है | आज हिंदी राष्ट्रभाषा है, जो व्यापक रुप में संपूर्ण देश में फैली हुई है | हिंदी ने राष्ट्रभाषा कें रुप में राष्ट्र की एकता, अखंडता तथा समृध्दी के लिए आवश्यक है | हिंदी संपूर्ण देश में आज संपर्क भाषा के रुप में व्यवहार में लाई जाती है | संपूर्ण राष्ट्र को भावात्मक, सांस्कृतिक, एकता स्थापित्त करने में

Dr. Pramod Ambadasrao Pawar, Editor-in-Chief ©EJ, All rights reserved.

सफल रही है | हिंदी भारत के १० राज्यों की मातृभाषा है | हिंदी में प्रचुर मात्रा में साहित्य उपलब्ध है | भारत में हिंदी बोलने बालों की संख्या ६५ प्रतिशत से अधिक है | किसी समृध्द भाषा का एक वैज्ञानिक रुप होता है, उसी प्रकार से हिंदी भाषा का भी एक विज्ञान है | हिंदी भाषा, संत, महात्माओं का उपदेशकों का योगदान भी कम नहीं है, ओ आम जनता के निकट थे| सुरदास, तुलसीदास, कबीर, रामदेव, रामानंद, मीराबाई, गुरु नानक, दादु दयाल आदि अनेक संत महात्माओं ने धर्म तथा संस्कृति के प्रचार-प्रसार के लिए हिंदी का प्रयोग किया और हिंदी में साहित्य का निर्माण किया |

आज अनेक विषयों को लेकर प्रातंवाद झगड़े होते हे, लेकिन हिंदी मतभेद भुलाकर सबकों एक साथ जोड़ने में समर्थ रही है | हिंदी भाषा ने आज गांव नगर, तथा महानगरों में आपस में जोडने में महत्वपुर्ण भुमिका निभाई है | आज अनेक क्षेत्रों में हिंदी भाषा का प्रयोग हो रहा है | हमारे प्रधानमंत्री श्री नंरेद्र मोदी जी ने राष्ट्रभाषा हिंदी में जो भाषण दिया था यह हमारे लिए गर्व की बात है | किसी देश में जो स्थान, राष्ट्रध्वज, राष्ट्रगीत होता वही स्थान हिंदी भाषा का है | आज हिंदी प्रदेशों में पाठशालाओं हिंदी भाषा को आनिवार्य कर दिया गया है | भारत के संविधान में धारा-३५१ जीन भाषाओं को स्थान दिया उसमें हिंदी है |

द्वितीय भाषा की शिक्षा :

भाषा की शिक्षा में मनुष्य व्यवहार में द्वितीय भाषा विशेष परिश्रम करके सीखता है | मातृभाषा के आतिरिक्त भाषा द्वितीय भाषा होती है | मराठी भाषीक के लिए हिंदी द्वितीय भाषा है | द्वितीय भाषा उसी देशकी या विदेशी भी हो सकती है | भारत में बहुतांश क्षेत्रों में हिंदी मातृभाषा है, ऐसे में अंग्रेजी भाषा इनकी द्वितीय भाषा रही है |

हिंदी भाषा का विकास :

'हिंदी' वस्तूत फारशी शब्द की देन है | हिंदी शब्द की निप्पती सिन्धु-सिंध से हुई फारशी में 'स' का उच्चारण 'ह' होता है | सिंधु से हिन्दु और सिंध से हिंद बन गया | हिंद में रहने वालों को ईरानी में 'हिंदी' कहा गया | हिंदी भाषा की निष्पत्ति १००० ई आसपास माना जाता है | १००० ई.से हिंदी के विकास के तीन क्षोत्रों में बाँटा गया है |

1. आदिकाल : १००० ई.से. १५०० ई.

आदिकाल में हिंदी अपभ्रश के निकट थी | यह काल हिंदी का बाल्यकालन था | आदिकाल में शिलालेख, ताम्रपत्र, तथा सिंध्दों , नाथ, जैन, कवियों, चारण कवियों मुस्लिम कवियों, स्वयंभु, अब्दुरेहमान, बब्बर, विघापति ने रचनाएँ की | इस समय हिंदी भाषा पर अपभ्रंश का प्रभाव था | इसके साथ, पश्चिमी हिंदी, डिंगल, पिंगल, मरुभाषा, खडीबाली, पुर्वी हिंदी आदि इस युग की हिंदी के रुप है | हिंदी का प्रारंभिक

Dr. Pramod Ambadasrao Pawar, Editor-in-Chief ©EJ, All rights reserved.

साहित्य राजस्थान और उसके आसपास लिखा गया | उस काल में काल में चंन्द्र, नरपर्ति, नाल्ह, मुल्लादाऊद, गोरखना, विघापति अमीर खुसरो, बंदान वाज आदि ने इस समय हिंदी में साहित्य लिख |

२. मध्यकाल : १५००ई.से १८०० ई तक

इस काल में हिंदी के ध्वनि, व्याकरण, शब्द-भण्डार में परिवर्तन हुए | भाषा के विकास पर. राजनैतिक, प्रभाव इस काल में पड़ा | हिंदी आधिक लोकप्रिय होने लगी थी | हिंदी में तुर्की, अरबी, फारशी, अंग्रेजी, फ्रांसीसी, पुर्तगाली के शब्दों का प्रयोग होने लगा था | इस काल में ब्रज, अवधी, सधुक्कडी खडीबोली तथा राजस्थानी में रचना की गई | बिहार में भोजपुरी मगही, और मैथिली भाषा के क्षेत्रों में भी ब्रजभाषा का प्रभाव था | इस काल में अवधी तथा सधुक्कडी खिचडी, पंचरंगी भाषा का प्रयोग किया गया | इस काल में जायसी, सुर, मीरा, तुलसी, केशव, बिहारी, भुषण, देव, सेनापती, आलम, धनानन्द, वजही, प्रमूख रचनाकार थे |

३. आधुनिक काल : १८०० से अब तक

आधुनिक काल में राजनैतिक, सामाजिक, स्थितियों ने हिंदी के विकास में काफी प्रभावित किया | व्याकरण के स्थिरिकरण में महावीर प्रसाद द्विवेरी ने मुख्य भुमिका निभाई है | प्रेस, रेडियों, शिक्षा, व्याकरणिक विश्लेषण का प्रभाव हिंदी पर हुआ | १८ वी शती के अंत तक अवधी और ब्रजभाषा का साहित्यक रुप जनभाषा से कटने लगा था | १८५७ की क्रांती के प्रभाव परिणाम स्वरुप गद्य निर्माण और पत्र-पत्रिकाओं को प्रोत्साहन मिला | खड़ीबोली की विशेष उन्नती हुई | इस काल में समाचार पत्र, मासिक पत्र, नाटक, उपन्यास, का विशेष आरंभ हुआ खड़ीबोली को इस काल में उर्दु से भी संघर्ष करना पडा था | हिंदी भाषा को परिष्कृत एवं परिनिष्ठित करने का कार्य द्विवेदी जी ने किया था | हिंदी साहित्य सम्मलेन, नागरी प्रचारणी सभा, का भाषा के विकास में उल्लेखनिय योगदान है | हिंदी ने इतिहास, धर्म, दर्शन सामाजिक शास्त्र, साहित्य, विज्ञान, सभा क्षेत्रों में प्रवेश किया था | उस काल हे लेखकों के साथ-साथ हिंदी सिनेमा हिंदी प्रचार संस्थान, गैरसरकारी संस्थाओं ने हिंदी के विकास में योगदान दिया है | हिंदी, साहित्य शिक्षण, शास्त्र, और राज-काज में अपना सामर्थ्य सिध्द कर चुकी है |

भाषा शिक्षण प्रक्रिया और विकास :

भाषा शिक्षण एक निरंतर चलने वाली सौद्देश प्रक्रिया है | औपचारिक भाषा शिक्षण की प्रक्रिया स्कुल, कॉलेज, विश्वविद्यालयों में चलती है | भाषा शिक्षण में छात्रों में मौखिक तथा लिखित क्षमता का विकास हो इस उद्देश से शिक्षा की विविध पध्दती का प्रयोग किया जाता है | भाषा शिक्षा में स्वाभाविक पध्दती, व्याकरण-अनुवाद पध्दती, डॉ. वेस्ट पध्दती, समन्वयामक पध्दतीयों का प्रयोग होता है | आदि पध्दतीयों से

Dr. Pramod Ambadasrao Pawar, Editor-in-Chief ©EJ, All rights reserved.

भाषा का शिक्षण प्राप्त किया जा सकता है | छात्रों को भाषा के शिक्षण में भाषा के चार कौशल को विकसीत करना होता है |

भाषायी कौशल :

१. श्रवण २. वाचन ३. लेखन ४. भाषन.

भाषा पर पुर्ण अधिकार प्रति के लिए इन चार कौशलों पर अधिकार प्राप्त करना होता है | भाषा के शिक्षण में छात्र के बचपन से लेकर महाविद्यालय तक भाषा शिक्षण के उद्देश्य अलग-अलग है |

भाषा शिक्षण के उद्देश्य :

१. ज्ञानर्जन २. विस्तृत क्षेत्र में विचारों के आदान-प्रदान के लिए ३. व्यवसाय एवं उद्योग क्षेत्र में कुशलता का विकास ४. नवीन संस्कृती का परिचय ५. साहित्य का निर्माण तथा रसास्वादन ६. व्यक्तित्व का परिमार्जन, इन उद्देश्य से छात्र भाषा सीखता है | अहिंदी भाषी छात्रों के लिए हिंदी सिखने में मातृभाषा का प्रभाव, इसके साथ-साथ, भौगोलिक, सांस्कृतिक, सामाजिक प्रभाव का परिणाम होता है, जिसके कारण हिंदी भाषा सिखते समय कुछ समस्याओं का सामना भाषा सिखने वालों का करना पड़ता है लेकिन, वर्तमान समय में, शिक्षा संस्थाओं के साथ - साथ सिनेमा, टी. व्ही. मोबाईल, वर्तमानपत्र, भाषा प्रयोग शाळा आदि अत्याधुनिक साधन हिंदी भाषा सिखने में महत्वपुर्ण भुमिका निभा रहे है |

Dr. Pramod Ambadasrao Pawar, Editor-in-Chief ©EJ, All rights reserved.